Indian Council for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

वर्ष - २०१६, अंक - प्रथम, "सौम्य" सम्वत - २०७३

गरिमा

वार्षिक पत्रिका

सा विद्या या विमुक्तये

इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केंद्र, ढाका

भारत का उच्चायोग

गरिमा वार्षिक पत्रिका

वर्ष २०१६, अंक-प्रथम

"सौम्य" सम्वत-२०७३

प्रकाशक

इं.गाँ.सां.के, ढाका

परामर्श मंडल

प्रवीर कुमार सरकार
रोशन आरा
महबूबुर नूर
स्वपन कुमार पाल
अंजय रंजन दास
नरगिस सुल्ताना
सिफत-ई-इलाही
खालिद हसन मून

सम्पादकीय पता

हिंदी विभाग
इं.गाँ.सां.के.

भारत का उच्चायोग,
ढाका, बांग्लादेश
पिन कोड -१२०९
ई मेल- igcc@hcidhaka.gov.in
इं.गाँ.सां.के. फेसबुक पेज-
https://www.facebook.com/IndiraGandhiCulturalCentre/?fref=ts

ग्राफिक्स

डॉ. अपर्णा पाण्डेय

विषय - सूची

मेरी पहली विदेश यात्रा (संस्मरण) - अंजय रंजन दास ५

अविस्मरणीय (संस्मरण) - सिफत-ई-इलाही ७

तुम (कविता) - खालिद हसन मून ८

अनदेखा द्वीप (कविता) - अजीमुद्दीन ९

एक बिंदु आंसू (कविता) - पार्थ अधिकारी १०

सुभाषितम (संकलित) - ज्वेल चन्द्र मजूमदार ११

रेखा चित्र - सुब्रत साहा, कंकण व्रत हलदार १२

छाया चित्र १३-२३

सूचना २४

कुल प्रष्ठ - २४

सन्देश - भारतीय उच्चायुक्त

भाषा की शक्ति से कौन अपरिचित है ? वह न केवल बौधिक अभिव्यक्ति का माध्यम है, वरन किसी देश की संस्कृति, मूल्यों, सामाजिक परिवेश, समाज और विश्व के प्रति उसके दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित करती है । हिंदी एक ऐसी ही सशक्त, समर्थ और विश्व चेतना को उन्नत करने वाली आध्यात्मिक मूल्यों से युक्त भाषा है । आज मंदारियन, स्पेनिश, अंग्रेजी के साथ संसार की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग हो रहा है । हमारे केंद्र के विधार्थी जिस लगन के साथ हिंदी भाषा का अध्ययन कर नित नई ऊचाइयाँ छू रहे हैं । ये हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है । इं.गां.सां.के. के विद्यार्थियों का हिंदी भाषा के प्रति आत्मिक लगाव इसी बात से प्रकट होता है कि वे प्रथम बार हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं । इस हेतु में हृदय से हिंदी भाषा पाठ्यक्रम के समस्त विद्यार्थियों और हिंदी अध्यापिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ।

श्री हर्ष वर्धन श्रृंगला
भारतीय उच्चायुक्त, ढाका

सन्देश - निदेशक, इं. गाँ. सां. के.

राष्ट्रभाषा किसी भी देश के स्वाभिमान की प्रतीक है । ठीक वैसे ही, जैसे प्राण के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं, उसी प्रकार राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र मूक है । आज हिंदी भाषा ने बहुत तेजी से सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बनाई है । त्रिनिदाद एवं टोबेगो, सूरीनाम, गुयाना, अमेरिका जैसे देशों में न सिर्फ़ हिंदी लोग सीख रहे हैं, अपितु व्यवहार में भी ला रहे हैं । हिंदी भारत की संपर्क भाषा है, जो अपनी मिठास और सहजता के कारण जन-जन में प्रिय है । इं.गां.सां.के. पर विद्यार्थी न केवल हिंदी पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं, वरन भारतीय संस्कारों, विचारों उसके आध्यात्मिक और दार्शनिक चिन्तन से परिचित हो रहे हैं । ये निश्चय ही हमारे लिए गर्व का विषय है । हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रति उनके गहरे लगाव को प्रदर्शित करता है । पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन पर मैं संमस्त हिंदी भाषा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों और अध्यापिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय को शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ ।

श्रीमती जयश्री कुंडू
निदेशक,
इं.गा.सां.के., ढाका

सम्पादकीय

आज जब सम्पूर्ण विश्व अंतर्जाल (इंटरनेट) के कारण एक छोटे से ग्राम में परिणित हो गया है । तकनीकी और भौतिक समृद्धि के चरम शिखर को प्राप्त कर के भी अशांत और अस्थिर है । ऐसे में आवश्यकता है, सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन की, जो मानवीय मूल्यों को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित कर सकें ।

सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करने में भाषा के अवदान को नकारा नहीं जा सकता । हिंदी ऐसी ही समृद्ध भाषा है, जो ऋषियों, संतों और आध्यात्मिक चिन्तन की प्रष्ठभूमि पर पुष्पित-पल्लवित हुई है । "**तेन त्यक्तेन भुंजीथा:**" का औपनिषदिक सन्देश जन-जन तक पहुंचाकर आत्म नियंन्त्रण और संयम का मार्ग प्रशस्त करती है । "**वसुधैव कुटुम्बकम**" के भाव से जोड़ती है । इसका कारण उसका सहज, सरल और सर्वग्राह्य होना है । वैश्विक स्तर पर हिंदी ने जो अपनी पहचान बनाई है, इसका कारण उसका अत्यंत उदार होना है । किसी भाषा पर आधिपत्य करना उसका स्वभाव नहीं, वरन स्वयं को उसके अनुरूप ढाल लेना उसका सहज गुण है, यही कारण है, कि वह आज विश्व के १२५ देशों में पढाई - सिखाई जा रही है ।

विचारों की उदात्तता, चिंतन की गहनता और व्यवहार की सरलता ही "**आत्मवत सर्व भूतेषु य: पश्यति स: पंडित:**" जैसे भारतीय संस्कृति के मूल मन्त्र का भाव स्थापित कर सकती है ।

इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा के विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने का एक अवसर मिल सकेगा तथा हमारा ये प्रथम प्रयास आप सबका स्नेह और आशीष पा सकेगा, इसी आशा के साथ-

डॉ. अपर्णा पाण्डेय
हिन्दी अध्यापिका
इं.गाँ.सां.के., ढाका

संस्मरण

मेरी पहली विदेश यात्रा

- अंजय रंजन दास

हिन्दी भाषा के साथ मेरा पहला परिचय हुआ 22 अक्टूबर 2013 को जब इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, ढाका में मैंने हिन्दी कक्षा में प्रवेश लिया । उस दिन मुझे नहीं पता था कि एक बड़ा आश्चर्य मेरे लिए इंतजार कर रहा है । पहले दो सत्रों में मैंने प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तर पूरा कर लिया । उसके बाद हिंदी भाषा सीखने के साथ-साथ भारतीय दर्शन पर आधारित आलोक प्रसंग, कालिदास का मेघदूत, श्रीमद्भगवद्गीता, भर्तृहरिशतकम, चाणक्यनीति आदि पुस्तकों का अध्ययन किया । इन पुस्तकों के अध्ययन के दौरान मेरे मन में भारत भूमि पर यात्रा करने की प्रबल इच्छा पैदा हुई । उसी समय भोपाल में दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ और मुझे वहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । हिन्दी छात्र प्रतिनिधि के रूप में बांग्लादेश से जाने वाला मैं पहला और एकमात्र व्यक्ति था ।

दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल शहर के लाल परेड मैदान में 10-12 सितम्बर 2015 तक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार दवारा आयोजित किया गया था । सम्मेलन स्थल का नाम था माखन लाल चतुर्वेदी नगर और यह पंचतत्व के आधार पर निर्मित था । सम्मेलन का उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों द्वारा हुआ । 39 देशों के प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया । सम्मेलन में बारह निर्धारित विषयों पर व्याख्यान सत्रों का आयोजन किया गया था । वहाँ पर दो विशेष प्रदर्शनियां लगाई गई थीं । विविधताओं से समृद्ध भारत की प्रादेशिक संस्कृति को प्रदर्शित करते - केरल का कलारीपयटटू नृत्य, असम का बिहू नृत्य, कश्मीर का रूफ नृत्य, गुजरात का सिछीगौमा नृत्य, पंश्चिम बंगाल का पुरूलिया छाऊ नृत्य 'महिषासुर का वध' और नृत्य नाटिका "अथ हिन्दी कथा" आदि का मंचन किया गया । मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम की ओर से विदेशी अतिथियों को राष्ट्रीय मानव संग्रहालय और जनजातीय संग्रहालय का भ्रमण कराया गया। समापन समारोह में भारत सरकार के माननीय गृह मन्त्री राजनाथ सिंह ने विद्वानों को विश्व हिन्दी

सम्मान प्रदान किया । समापन समारोह में यह निर्णय लिया गया कि 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस में किया जाएगा ।

बांग्लादेश से एक छात्र प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन में भाग लेने जाते समय मैंने कोलकाता, भोपाल और दिल्ली में कई दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया । जब मैं भोपाल से लौटकर आ रहा था, तो मेरे गले में पड़े हुए दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन के परिचय-पत्र को देखकर इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर मेरे साथ बहुत से लोगों ने छायाचित्र लिए । यह सब कुछ मेरे लिए सचमुच अद्भुत और आश्चर्यजनक था । मेरी पहली विदेश यात्रा मेरे मन में सदैव अविस्मरणीय संस्मरण बनकर रहेगी । पहली विदेश यात्रा में सहायता के लिए मैं भारत के उच्चायोग, इं.गां.सां.के की निदेशक जयश्री कुण्डू, हिन्दी अध्यापिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय और सहपाठियों के प्रति बहुत आभार प्रकट करता हूँ ।

माध्यमिक द्वितीय
इं.गाँ.सां.के., ढाका

संस्मरण

अविस्मरणीय.....

- सिफ़त-ई-इलाही

किसी का शौक उसकी आजीविका भी बन सकता है, ये मैंने कभी सोचा नहीं था । मुझे बचपन से ही भाषाएँ सीखने का शौक रहा है । मैं जब स्कूल में थी, उस समय से ही बांग्ला, अंग्रेजी गानों के साथ हिंदी गाने भी सुना करती थी और यहीं से मेरी हिंदी भाषा के प्रति रूचि पैदा हुई । हिंदी न सिर्फ़ बहुत मीठी भाषा है, वरन नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी सिखाती है ।

कहते हैं, जब कोई इंसान अपनी पूरी लगन, इच्छा शक्ति और निष्ठा के साथ कोई कार्य करता है, तो वह निश्चय ही सफल होता है । मैं अपने शौक को पूरा करने के उद्देश्य से इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र पर भाषा सीखने हेतु भर्ती हुई । उसी समय मुझे ज्ञात हुआ, कि बांग्लादेश बेतार में हिंदी समाचार वाचक और अनुवादक के पद हेतु आवेदन मांगे गए हैं । मेरी अध्यापिका ने वहाँ आवेदन करने हेतु प्रोत्साहित किया, डरते हुए मैंने आवेदन किया और आश्चर्य: जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं कि थी, वो आशातीत परिणाम मेरे हाथ था । मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था, जब मुझे हिंदी समाचार वाचिका और अनुवादक के पद पर नियुक्ति का नियुक्ति-पत्र प्राप्त हुआ ।

बांग्लादेश बेतार में काम करते हुए मुझे डेढ़ वर्ष के लगभग हो गया है और यहाँ मैं अपने कार्य का पूरा आनंद ले रही हूँ । लोगों से सुना था, जब आपका शौक आपकी आजीविका बन जाये, तो वह फिर काम नहीं, पूजा बन जाता है, ये अब मेरा व्यक्तिगत अनुभव है । प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में न जाने कितनी घटनाएँ घटती हैं, लेकिन प्रत्येक घटना अविस्मरणीय नहीं होती, परन्तु एक भाषा आपको आजीविका दिला सकती है, ये सचमुच अविस्मरणीय है । .....

माध्यमिक प्रथम
इं.गाँ.सां.के., ढाका
हिदी समाचार वाचिका और अनुवादक
(बांग्लादेश बेतार)

कविता

तुम

- खालिद हसन मून

कौन हो तुम ?
दिन और रात बस तुम्हें ही ढूंढ़ता हूँ,
ख्वाबों में केवल तुम्हें ही छू लेता हूँ,
कौन हो तुम !

क्या अभी भी बहुत सी रात,
बहुत सा अँधेरा बहुत सा इंतज़ार,
हर लम्हा सिर्फ़ तुम्हारे ही ख्यालों में
खोया रहता हूँ पता नहीं, पता नहीं क्यूँ !
तुमें देखकर ठहर गई अतीत प्रेम की विफलता !

अचानक रुक गई थी ट्रैफिक सिग्नल में,
बज रहे विरह गीत
ठहर गया था बहुत कुछ
कौन जानता है, कौन हो तुम !

सिर्फ़ तुम्हारी वजह से अच्छा लगा यांत्रिक शहर
अच्छा लगा रात का आकाश ,तारे और आकाशगंगा ।
वादा था उस आकाशगंगा पर हम दोनों एक साथ पैदल चलेंगे
सिर्फ़ रहेगा हाथ का स्पर्श और नि:शब्द वार्तालाप
लेकिन नि:शब्द से केवल तुम ही चले गए !

इस समन्दर में अब कोई लहर नहीं उठती,
सिर्फ़ खारे पानी से धुंधला जाती हैं आँखें
धुंधला जाता है पुराना ख़्वाब ।

अनुवाद - सिफ़त-ई-ईलाही
बांग्ला कविता - खालिद हसन मून
माध्यमिक प्रथम

कविता

अनदेखा द्वीप

- अजीमुद्दीन

तुम को आना ही होगा मेरी सीमा पर
मैं विरह को और सह नहीं सकता ,
तुमको भूलने की प्रतिज्ञा को मैं,
कभी मान नहीं सकता ।

मैं फिर से प्रेम के समंदर में
तैरना चाहता हूँ ।
इस बार मैं तुमको ,
किसी भी हालत में ,
डूबने नहीं दूंगा ।
तुम्हारे साथ एक अनजाना सागर पार करूंगा ।

पहुंचूंगा एक ऐसे द्वीप में
जहाँ पर कोई ,
नाव भिड़ाने का साहस नहीं करेगा ,

जहाँ हिंसा ,द्वेष और रक्तपात नहीं होगा ।
हमारे द्वीप में सिर्फ प्यार ही आबाद होगा ,
प्रेम ही होगा पहला और आखिरी शब्द ,
हमारे ख्वाबों के द्वीप में ।

क्योंकि संसार को प्रेम की ही
आवश्यकता है !

अनुवाद - सिफत-ई-इलाही
बांग्ला कविता - अजीमुद्दीन
माध्यमिक प्रथम
इं.गाँ.सां.के., ढाका

कविता

एक बिंदु आंसू

- पार्थ अधिकारी

उत्तर से हिम वायु
दक्षिण में बह गया,
यक्ष की तरह हृदय
हुआ हिम मेरा ॥

देह की वृत्ति
न करे निवृत्ति
अकेला खड़ा हूँ रात में
आँखों को बंद करके
स्मरण में आया वह ॥

ऊष्म हुआ हृदय
चंचल हुआ मन
प्रेमालिप्त मन मेरा
भूल गया आत्मीय स्वजन ॥

चिन्मय स्फूर्ति का आभास
खिलता है हृदय पर
देवात एक बिंदु आंसू
झर उठा आँखों से ॥

फिर से कर दिया शीतल
मुझे उस आनंद के स्मरण से ॥

माध्यमिक प्रथम
इं.गाँ.सां.के., ढाका

सुभाषितम्

ज्वेल चन्द्र मजूमदार
(संकलित)

कोई व्यक्ति अपने कर्मों से महान होता है, जन्म से नहीं ।

चाणक्य

जहाँ प्रेम है, वहाँ जीवन है ।

महात्मा गाँधी

मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ, जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाये ।

बी.आर .अम्बेडकर

भगवान् ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियां व क्षमताएं प्रदान की हैं । ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है ।

अब्दुल कलाम

मन की गतिविधियों और भावनाओं के रूप में भगवान् की शक्ति सदा तुम्हारे साथ है और लगातार साधन की तरह तुम्हें प्रयोग कर रही है ।

भगवद्गीता

कभी मत सोचिये, कि आत्मा के लिए कुछ असम्भव है । ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है । अगर कोई पाप है, तो वह यही, कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं ।

स्वामी विवेकानंद

माध्यमिक प्रथम
इं.गाँ.सां.के., ढाका

हिंदी विद्यार्थियों द्वारा बनाये गए रेखा-चित्र

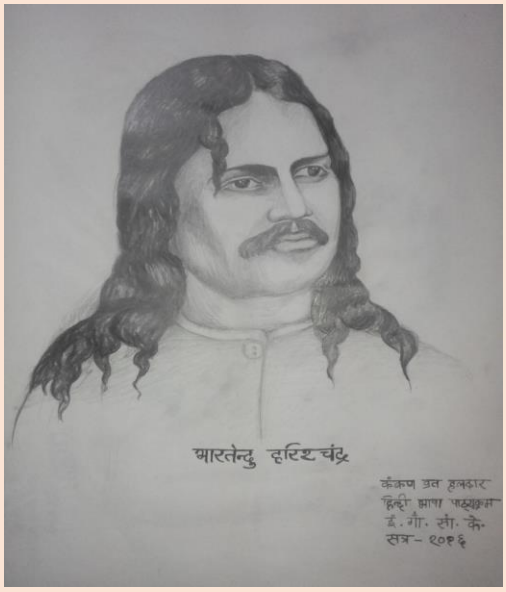

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

- कंकण व्रत हालदार

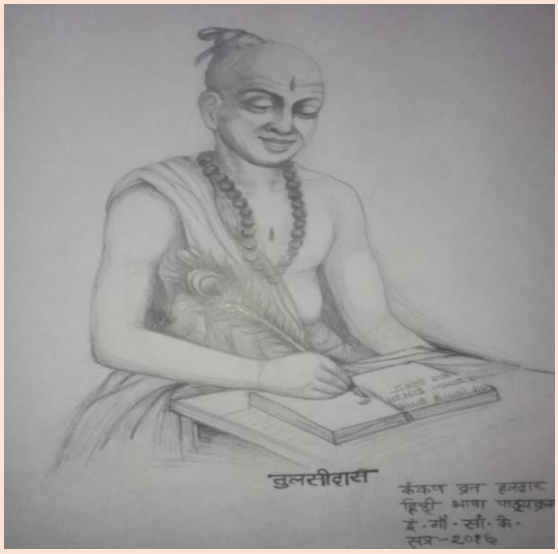

तुलसीदास

- कंकण व्रत हालदार

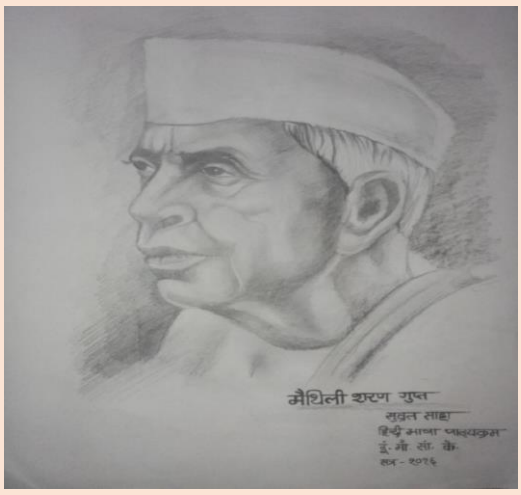

मैथिलीशरण गुप्त

- सुब्रत साहा

सूरदास

- सुब्रत साहा

छाया-चित्र

भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से निर्मित आधुनिक भाषा इंस्टिट्यूट, ढाका वि.वि. में हिंदी भाषा विभाग का ७/६/२०१५ को शिलान्यास करते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं कुलपति, ढाका वि.वि.

हिंदी भाषा विभाग का उद्घाटन करते प्रो. ए.ए.एम.एस आरिफिन सिद्दीकी कुलपति, ढाका वि.वि.

आधुनिक भाषा इंस्टिट्यूट, ढाका वि.वि. में नव निर्मित हिन्दी भाषा विभाग

अध्यापन - कक्ष

पुस्तकालय

अध्यापक - कक्ष

हिंदी भाषा लघु पाठ्यक्रम, ढाका वि.वि. के छात्र शिक्षिकाओं के साथ

हिंदी भाषा एक वर्षीय पाठ्यक्रम, ढाका वि.वि. का प्रथम बैच २०१५ - २०१६

इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केंद्र, धानमंडी में अध्ययनरत छात्र

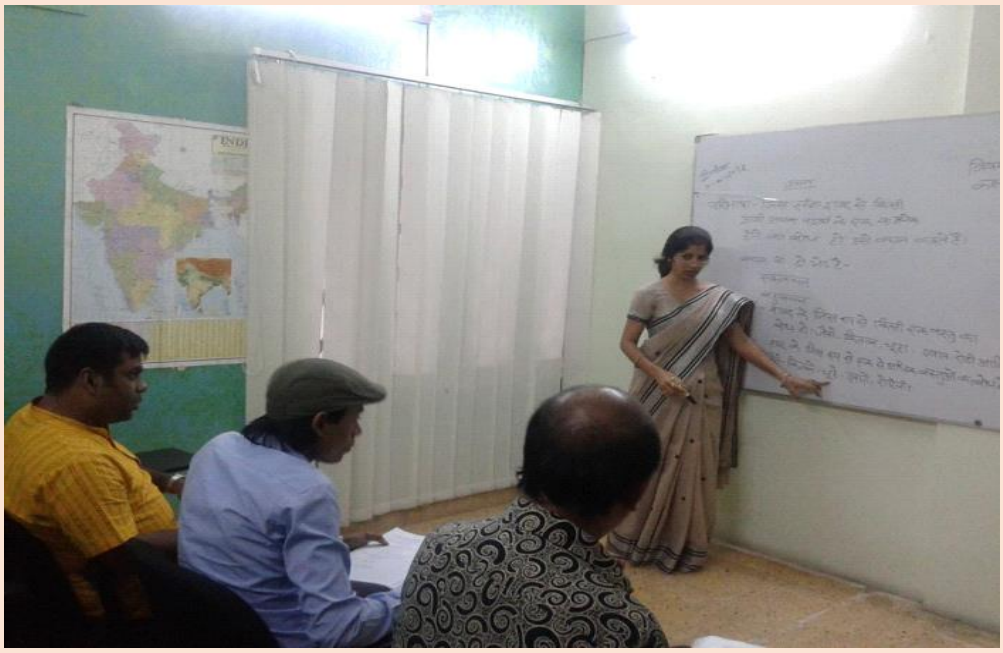

इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केंद्र, गुलशन में हिंदी विषय का अध्ययन करते विद्यार्थी

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर भारत के उच्चायोग की ओर से लगाई गई पुस्तक-प्रदर्शनी

श्री हर्षवर्धन श्रृंगला, भारतीय उच्चायुक्त एवं उप उच्चायुक्त के साथ विद्यार्थी

पूर्व राजदूत ढाका, वीना सीकरी तथा इ.गा.सां.के. की निदेशक के साथ हिंदी विद्यार्थी

इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र के मंच पर काव्य-पाठ तथा समूह गान प्रस्तुत करते छात्र

इं.गाँ.सां.के. छठवाँ स्थापना दिवस समारोह (११/३/२०१६)

मुख्य अतिथि डॉ. गौहर रिज़वी, बांग्लादेश प्रधानमंत्री के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार और श्री हर्ष वर्धन श्रंगला, भारतीय उच्चायुक्त से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. अपर्णा पाण्डेय

हिंदी समूह गान प्रस्तुत करते विद्यार्थी और शिक्षिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय

मुख्य अतिथि के साथ कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थी एवं अध्यापकगण

"श्रेष्ठ विद्यार्थी" सम्मान प्राप्त करते हुए हिंदी भाषा पाठ्यक्रम के विद्यार्थी

नरगिस सुल्ताना

अन्जय रंजन दास

सिफ़त- ई - इलाही

विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार योजना के अंतर्गत इ.गा.सां.के. से चयनित विद्यार्थी

प्रथम बार इं.गां.सां.के., ढाका से बांग्लादेश के दो विद्यार्थी (अंजय रंजन दास एवं नर्गिस सुल्ताना) का केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में हिन्दी भाषा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए "विदेशों में हिन्दी प्रचार - प्रसार योजना" के अंतर्गत चयन हुआ है ।

यह योजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा संचालित की जाती है ।

नर्गिस सुल्ताना बांग्लादेश बेतार (बांग्लादेश रेडियो) में हिन्दी समाचार वाचक के पद पर नियुक्त है और २०११ से इं.गां.सां.के. में हिन्दी सीख रही हैं । अंजय रंजन दास २०१३ से इं.गां.सां.के. में हिन्दी सीख रहें हैं । वह भोपाल में हुए दसवें विश्व हिन्दी सम्मलेन में सम्मिलित हो चुके हैं ।

इं.गाँ.सां.के. धानमंडी, ढाका पर प्रथम बार हिंदी फिल्म का प्रदर्शन - "सूरज का सातवाँ घोडा" (३० सितम्बर २०१६)

हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम २०१६ की समाप्ति पर सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक जयश्री कुंडू एवं हिंदी अध्यापिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय के साथ विद्यार्थीगण

सूचना

१. हिन्दी भाषा, योग, मणिपुरी नृत्य, चित्रकला, भारतीय शास्त्रीय संगीत (कंठ), तबला इं.गाँ.साँ.के. धानमंडी केंद्र पर संचालित त्रैमासिक पाठ्यक्रम ।

२. आधुनिक भाषा संस्थान ढाका विश्वविद्यालय, हिन्दी भाषा एक वर्षीय कनिष्ठ वर्ग पाठ्यक्रम । (Junior Certificate Course)

३. मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा विदेशी छात्रों के अध्ययन हेतु विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार (Propagation of Hindi Abroad {PHA}) योजना हेतु संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी हेतु संपर्क सूत्र -

www.khsindia.org

Central Institute of Hindi (Kendriya Hindi Sansthan)

Hindi Sansthan Marg,Agra -282005, INDIA

Office -0562 2530159, 0562 2530684

Academic Year - 1ST August to 30TH April

INDIRA GANDHI CULTURAL CENTRE
INDIRA GANDHI CULTURAL CENTRE
HIGH COMMISSION OF INDIA, DHAKA